Dr.pragya kumari
Asst.prof.
Dept.of psychology
H.D.Jain college Ara

Scanned with CamScanner

(ii) अन्तर्निरीक्षण-रिपोर्ट (*Introspective Report*) :

"निरर्थक पदों को याद करना एक कठिन काम था। शुरू में तो ऐसा लगा कि मुझसे यह काम नहीं होगा। लेकिन, दो प्रयासों के बाद सुविधा महसूस हुई। मैंने कुछ निरर्थक पदों का सम्बन्ध सार्थक शब्दों के साथ जोड़ कर याद करना शुरू किया। बीच के निरर्थक पदों की अपेक्षा शुरू तथा अन्त के पदों को याद करने में अधिक सुविधा महसूस होती थी।"

9. प्रदत्त-निरूपण (*Treatment of the data*) :

प्रयास-संख्या (No. of trials)	1	2	3	4	5	6	7
सही प्रत्यावाह की संख्या (No. of correct recall)	2	4	6	7	8	8	10
सही प्रत्यावाह का % (Percentage of correct recall)	20%	40%	60%	70%	80%	80%	100%

शिक्षण वक्र (Learning curve)

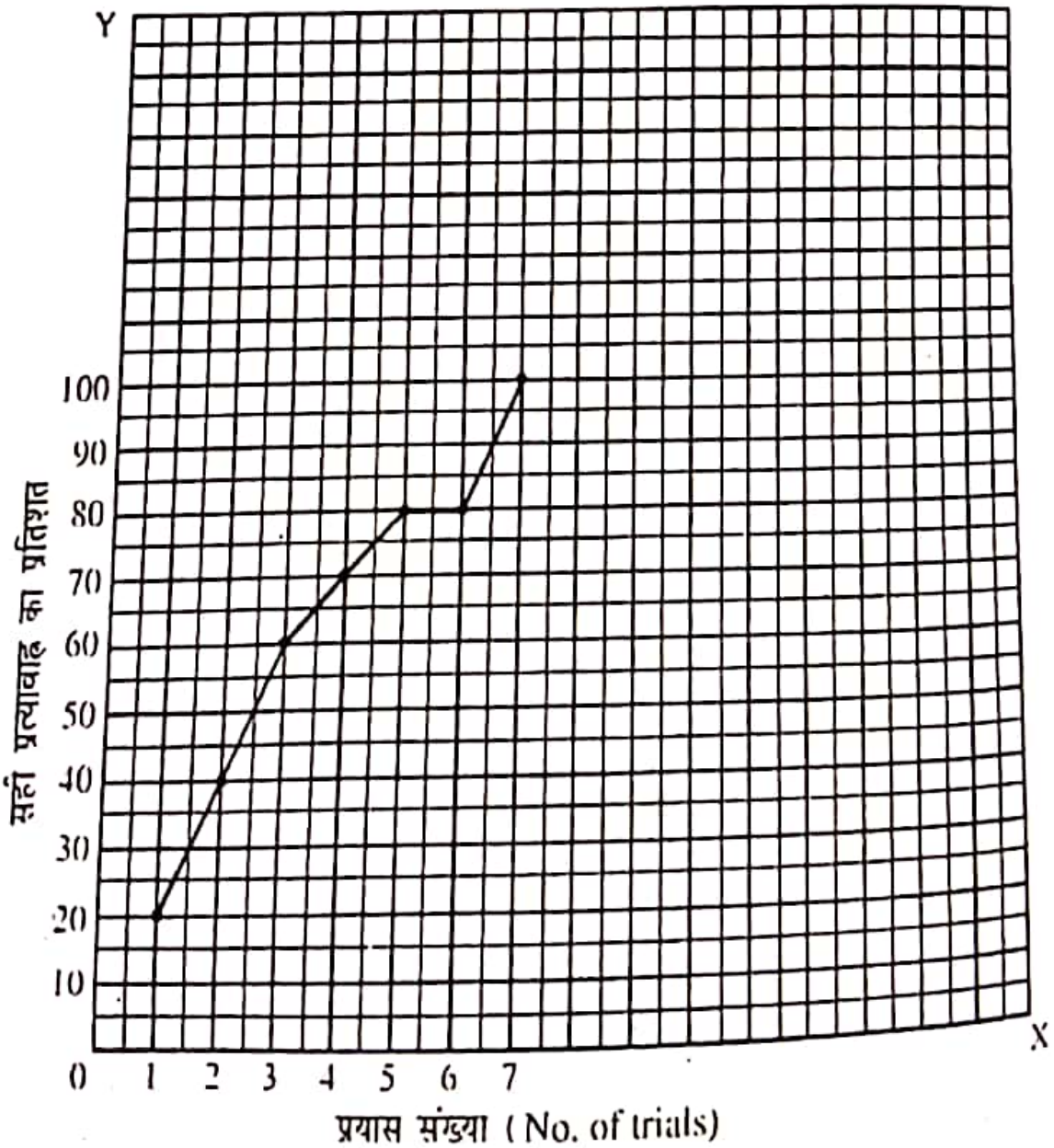

Scanned with CamScanner

10. विवेचन एवं निष्कर्ष (*Discussion and Conclusion*) :

उपर्युक्त प्रदत्त-निरूपण से स्पष्ट है कि प्रयोज्य ने दस निरर्थक पदों को 7 प्रयासों में सीख लिया । आरम्भ में सीखने या याद करने की रफ्तार मन्द थी । लेकिन, बाद में यह रफ्तार तेज हो गयी । इसका एक कारण यह था कि पदों की पुनरावृत्ति (repetition) होने से धारणा सवल बनती गयी । दूसरा कारण, जैसा कि प्रयोज्य ने स्वयं अपने प्रतिवेदन में कहा है, यह था कि प्रयोज्य ने आगे चलकर निरर्थक पदों का साहचर्य सार्थक शब्दों के साथ संबंध स्थापित करके याद करना शुरू किया । ग्राफ देखने से भी स्पष्ट होता है कि जैसे-जैसे प्रयास-संख्या बढ़ती गयी, सही प्रत्यावाह्न का प्रतिशत बढ़ता गया, सातवें प्रयास में 100% शिक्षण पाया गया । इस तरह परिकल्पना प्रमाणित हो गयी । निष्कर्ष यह प्राप्त हुआ कि अभ्यास के साथ-साथ प्राथमिकता-नियम तथा तात्कालिकता-नियम के आधार पर व्यक्ति निरर्थक पदों को सीखता है ।

Scanned with CamScanner